4

और अबै न कुदेव सुहावै

और अबै न कुदेव सुहावै, जिन थाके चरनन रति जोरी ॥टेक॥

कामकोहवश गर्दै अशन असि, अंक निशंक धरै तिय गोरी ।
औरनके किम भाव सुधारें, आप कुभाव-भारधर-धोरी ॥१॥

तुम विनमोह अकोहछोहविन, छके शांत रस पीय कटोरी ।
तुम तज सेय अमेय भरी जो, जानत हो विपदा सब मोरी ॥२॥

तुम तज तिनै भजै शठ जो सो, दाख न चाखन खात निमोरी ।
है जगतार उधार 'दौलको', निकट विकट भवजलधि हिलोरी ॥३॥

हे जिनेन्द्रदेव अब मुझे मिथ्यादेव अच्छे नहीं लगते। अब तो मैंने आपके चरणों से प्रेम जोड लिया है॥ टेक॥

मिथ्यादेव काम-क्रोध के वशीभूत हैं, भोजन ग्रहण करते हैं, शस्त्र धारण करते है और निःशंक होकर अपने साथ में सुन्दर स्त्री को धारण करते हैं। वे दूसरों के भाव क्या सुधारेंगे? स्वय ही अनेक खोटे भावों को धारण करते हैं॥ १॥

किन्तु हे जिनेन्द्रदेव । आप मोहरहित है, क्रोधरहित हैं, क्षोभरहित हैं और शान्तिरस की कटोरी पीकर तृप्त हो गये हैं। मैंने आपकी सेवा का त्यागकर जो अनन्त दुःख सहन किये है, उन्हें आप भली-भांति जानते हैं॥ २॥

हे प्रभो ! जो जीव आपको त्यागकर उन मिथ्यादृष्टि देवों की उपासना करते हैं वे दाख का स्वाद नही लेते, निबोरी ही खाते हैं। कविवर दौलतराम कहते है कि हे जगत को तारनेवाले जिनेन्द्रदेव । इस भयानक संसार-समुद्र की हिलोरों से मेरा शीघ्र उद्धार कीजिए॥ ३॥